

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैव जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४६ वा ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०१५ ❖ वीर संवत् २५४१ ❖ विक्रम संवत् २०७१

॥ भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक अंक ॥

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● अहिंसा को अपनाएँ : भ्रूणहत्या एवं दहेज हत्या से बचें	२३	● महालाभ ९३
● वर्षीतप पारणे - चिचोंडी	२७	● अहंकार : कारण और निवारण ९५
● कव्हर तपशील	२८	● माझ्या आईसाठी मागणं १०१
● साधु साध्वी संमेलन, इंदौर	२९	● हास्यजागृति १०३
● श्री. सुभाषजी रुणवाल, मुंबई	३१	● गोल्डन डायरी १०४
● महावीर गाथा	४३	● आजच्या परिप्रेक्षात श्रावकाचार १०७
● बुद्धिमान व्यक्ति का आहार मांसाहार नहीं हो सकता	६७	● पुस्तकें कैसे पढ़ें १११
● महामंत्र की साधना	७१	● चिंता सातवी पीढी की १२१
● व्यक्तित्व विकास का दर्पण : वाणी	७६	● कडवे प्रवचन १२१
● धर्म और समाज में बढ रहे आडम्बर प्रदर्शन पर कैसे रोक लगाएँ?	७७	● स्थल प्रदर्शन १२३
● हमारा नयनपथ है महावीर	९१	● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १२५
		● आपली आणि आपली मुले १२७
		● समझ जीने की १२९
		● मुलांच्या लग्नाची समस्या १३१

● कबीर की सहज वाणी	१३२	● आचार्य विजय वल्लभ स्कूल, पुणे	१६३
● ये बस्ती नहीं है	१३३	● आदिनाथ स्थानक, पुणे	१६७
● जीवना विषयी... थोड काही	१३५	● दीक्षार्थीचा वरघोडा - ठाणे	१६८
● उन्हाळ्यात घ्यावयाची तत्वेची काळजी	१३६	● श्री. अक्षयजी जैन - साहित्य रत्न	१६८
● आई	१३७	● पुणे दीक्षा	१६९
● श्रुतभवन संशोधन केंद्र, कात्रज, पुणे	१३९	● अँसिडीटी (अम्लपित्त)...	
● अपरिग्रह	१४१	● घर घर की कहानी	१७१
● भले व्हावे	१४१	● ज्ञान प्राप्ति के चार साधन : एक दृष्टी	१७७
● समस्या स्वास्थाविषयी, उत्तर		● मुली वाचवा देश वाचवा	१७९
● आहार नियोजनाचे	१४३	● हम इसे रोक सकते है ।	१८१
● भूल सुधारो, भला बनो	१४५	● विश्व धर्म के सुर्य भगवान महावीर	१८३
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा - इन्सान बण	१४७	● प्रेरणा	१८५
● बच्चों के विकास के लिए माँ का संस्कारी होना जरूरी है ।	१४९	● श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल	
● सच्चा धर्म सच्चा धर्मी	१५१	● बहुआयामी व्यक्तिमत्व	१८७
● तुलना करें, पर किससे ?	१५२	● मोह छोडो	१८९
● श्री नेमिचंद्रऋषिंचे संधाराव्रत, पुणे	१५४	● संयम बहुमोल जीवन मूल्य	१९१
● वाचकांचे मनोगत	१५५	● जैन सामुहिक विवाह	१९५
● बाफना एज्युकेशन ग्रुप, निगडी	१५६	● संचेती ट्रस्ट, पुणे	१९५
● सिध्दाचलम् चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे	१५९	● बेटी बचाओ, बेटी पढाओ	१९६
● ISVL Launches PSVI, Pune	१६१	● भगवान महावीर की दृष्टि में सर्वोदय	१९७
		● विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी - १५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी - ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी - ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ३० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line / AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्रफ्टने 'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruiti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, मो. संजय: ९८२२०८६९९७ सुनंदा: ९४२३५६२९९१ www.jainjagruiti.in
Email : jainjagruiti1969@gmail.com • Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ पुणे शहर ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ पुणे शहर - श्री. अभिजीत डुंगरवाल, ९४२३२३४१६०
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ सासवड, हडपसर, पुणे - श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
- ❖ दापोडी, सांगवी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ धनसोली, नवी मुंबई - श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- ❖ नाशिक - श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन: ०२५३-२३११००८, मो. ९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ बीड - श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर - श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ लासलगाव - श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.: ९३२५००४९५०
- ❖ अंमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर- श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ९९६०००००२५
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन. ०२३१-२५४२२५३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४
- ❖ वासंदा- नवसारी (गुजरात) - श्री. राजकुमार बंसीलालजी पारख, मो. : ०९४२९४५०२९६
- ❖ दिल्ली - श्री. राजेश शिंगवी, दिल्ली १६. मो. ०९९९९९८८२८

अहिंसा को अपनाएँ : भ्रूण-हत्या एवं दहेज-हत्या से बचें

लेखक : आचार्य श्री हिराचंद्रजी म.सा.

परम पुनित परम कल्याणकारी तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म कल्याणक दिवस आज हम-सबके बीच उपस्थित है। जयन्ती जीने की और जीतने की प्रेरणा देती है। आप-वचन “कलिकलेशनाशकः कल्याणकः” अर्थात् ‘कल्याणक’ कलियुग के क्लेश का नाश करने वाला होता है।

भगवान् महावीर का सन्देश जीवन में विद्यमान अन्याय, अभाव और अज्ञान को मिटाने वाला है। जीवन की जितनी भी पीड़ाएँ हैं, दुख हैं, संवेदनाएँ हैं उनके मूल में अन्याय, अभाव और अज्ञान रहा हुआ है। इनके समाधान हेतु भगवान् महावीर के सन्देश में एक त्रिपुटी है-अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त।

जीवन में ‘अहिंसा’ को हम कई शब्दों से कह सकते हैं। एक अर्थ में इसे श्रद्धारूप भी कहा जाता है। इसे दया के रूप में और अनुकम्पा के रूप में भी कह सकते हैं। जब यही अहिंसा किसी को पीड़ा नहीं देने की भावना से जागृत होती है तो इसे ‘श्रद्धा’ के नाम से कहा जा सकता है। श्रद्धा या सम्यग्दर्शन का एक लक्षण ‘अनुकम्पा’ है। भगवान् महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद इसी अहिंसा का आचरण रूप सन्देश दिया।

प्रभु महावीर ने दो तरह के जीवन सामने रखे-एक द्रव्य जीवन एवं दूसरा भाव जीवन। एक लौकिक जीवन, दूसरा लोकोत्तर जीवन। लौकिक जीवन में जीतने भी भक्त हुए हैं उनका आदर्श आज भी प्रेरणादायी है। राम ने पिता के वचन निभाने की भावना से राज्य छोड़ दिया। कृष्ण ने माता का सम्मान बढ़ाया। श्रावण ने मातृ-पितृ-भक्ति से उन्हें अपने कन्धों पर बिठाकर आदर्श सामने रखा। गणेश ने माता की आज्ञा-पालन के लिए सिर

कटवा दिया। न जाने कितने ऐसे भक्त हैं जिन्होंने माता-पिता की भावना रखने के लिए स्वयं ने भले ही कष्ट सह लिये, किन्तु उनको शान्ति पहुँचाई। मैं उन सब उदाहरणों के आगे महावीर को रख रहा हूँ। प्रभु महावीर जन्म के पूर्व मातृ-भक्ति रखने वाले महापुरुष रहे हैं। गर्भ में मेरे हलनचलन से माता को कष्ट हो रहा है, अवधिज्ञान से यह जानकर उन्होंने अपने अंगों को संकुचित कर लिया और हलनचलन की क्रिया रुकते ही माता चिन्तित हुई। प्रभु ने, जो तीन ज्ञान के धारक थे, गर्भावस्था में संकल्प कर लिया कि माता-पिता के जीवित रहते मैं दीक्षा नहीं लूँगा। भगवान् महावीर के सन्देश में-

सव्वे जीवावि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं।

तम्हा पाणिवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं॥-दश.अ.६, गाथा११

सभी जीव जीना चाहते, कोई भी मरण नहीं चाहते।

इसलिए जीव-वध है दारुण, निर्ग्रन्थ सदा वर्जन करते।।

सभी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। इसलिए निर्ग्रन्थ प्राणिवध का वर्जन करते हैं।

जीवन जीने के लिए आपको कैसे-कैसे आदर्श मिल रहे हैं? आप अनेक परम्पराओं के अनुयायी यहाँ बैठे हैं इसलिए अनेक दृष्टान्तों से मैं अपनी बात रख रहा हूँ। कोई जाति, कोई परम्परा, कोई धर्म दुख देने की बात नहीं बताता। सभी धर्मों में अनुकम्पा की बात कही जाती है। जहाँ दया है, वहाँ धर्म है। तुलसीदास जी की भाषा में कहूँ-

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।

तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण।।

कबीरदास जी के शब्दों में-

भावे जाओ द्वारका भावे जाओ गया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सबमें मोटी दया।।
रामचरितमानस में इसी बात को इस प्रकार कहा
गया-

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं
अधमाई।।

दशवैकालिक अध्ययन ६ गाथा ९ में कहा गया-
तत्थिमं पढमें नाणं महावीरेण देसियं।

अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो।।

भूतकाल में जितने सर्वज्ञ-सर्वदर्शी हुए हैं, वर्तमान
में धर्मावतारी कहे जा रहे हैं, आगे जो होंगे वे सब कहते
हैं कि अहिंसा शाश्वत धर्म है -

से बेमि-जे अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा
अरहन्ता। भगवन्तो ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति,
एवं पण्णवेति एवं परूवेति, सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे
जीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण
परिघेतव्वा, न परितावेयव्वा, ण उद्वेयव्वा। एस धम्मो
सुध्दे णितिए सासए समिच्च लोयं खेयण्णेहिं पवेइए। -
आचाराङ्ग अध्ययन ४ उ.१, सूत्र १

वह मैं कहता हूँ - जो अरहंत भगवान् अतीत में
हुए हैं, जो वर्तमान में और जो भविष्य में होंगे वे सभी
इसी प्रकार आख्यान करते हैं, इस प्रकार कहते हैं, इस
प्रकार प्रज्ञापन करते हैं, इस प्रकार प्ररूपण करते हैं कि
सभी प्राण, सभी भूत, सभी जीव, सभी सत्त्व मारने योग्य
नहीं हैं, पीड़ित करने योग्य नहीं हैं, बन्दी बनाने योग्य नहीं
हैं, परिताप देने योग्य नहीं हैं और न प्राणों का विनाश
करने योग्य से सीख लेनी होगी। तीन और तीन कितने
होते हैं, आप तुरन्त बोल देंगे- तीन और तीन छह।
भगवान् महावीर का स्याद्वाद सिद्धान्त यदि आपके पास
है तो आपका तीन और तीन छह के प्रति आग्रह नहीं
होगा। आपका स्पष्ट चिन्तन होगा - **तीन ऊपर और
तीन नीचे होते हैं अर्थात् तीन में तीन जोड़े जाते हैं
तो छह होंगे और तीन के पास लिखे जाते हैं तो**

तेँतीस होंगे। तीन और तीन के बीच गुणा का
निशान है तो फल में नौ होंगे। महावीर प्रभु के
अनेकान्त दर्शन से आप कहीं उलझेंगे नहीं। उलझते
वे हैं जो आग्रह लेकर चलते हैं। आग्रह लेकर
चलने वालों का समाधान न तो हुआ है, न होगा।

अहिंसा परम धर्म क्यों है, इसको समझाने हेतु
ज्ञानियों ने कहा-आपसे कोई भी पाप हो सकता है, पर
जब आपको पाप की जानकारी हो जाय तो पश्चात्ताप
से आप पाप की शुद्धि कर सकते हैं। चाहे तो पाप की
कालिमा धो सकते हैं। मान लीजिये आप झूठ बोल
गये, किन्तु झूठ बोलने के बाद कभी आपका विवेक
जग गया तो आप सत्य स्वीकार करने में भी संकोच नहीं
करेंगे। इससे आपका पाप धुल सकता है। लोभ के वश
आपने किसी की गांठ काट ली अर्थात् चोरी कर ली।
दूसरों का माल दबा लेने के बाद भी आपका सद्ज्ञान
जगा तो आप ब्याज सहित वह माल वापस करके
अपनी शुद्धि कर सकते हैं। कभी आपको क्रोध आ
गया। आवेश में आपने किसी से झगड़ा कर लिया।
लेकिन कुछ दिनों के बाद आपके मन में विचार आ
सकता है कि झगड़ा करना ठीक नहीं तो आप हाथ
जोड़कर, पगड़ी पैरों में रख कर भी क्षमायाचना करके
झगड़ा मिटा सकते हैं। आपको कभी अहंकार आ गया,
कभी लोभ आ गया, कभी मान आ गया, इन सबके
पाप धोये जा सकते हैं, किन्तु यदि आपने किसी
प्राणी के प्राण हरण कर लिये, उसे मार दिया तो
आप उसके प्राण किसी भी हालत में लौटा नहीं
सकते। आप तो क्या भगवान् से प्रार्थना करने पर भी
उसे जीवित नहीं किया जा सकता। **जो प्राण आप दे
नहीं सकते उन्हें लेने का आपको क्या अधिकार ?
छोटे से छोटे जीव में प्राण हैं। वह भी आपकी तरह
जीवित रहना चाहता है, मरना नहीं चाहता। अतः जिसे
आप दे नहीं सकते उसे लेने का आपको अधिकार नहीं।
इसीलिए अहिंसा को परमो धर्म कहा है। आप हिंसा**

किसकी करते हैं? आप अपने को मारना नहीं चाहते। आप पराये को मारते हैं। मैं आपसे पूछूँ - पराया कौन? कहा है-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥

आपको सुख प्यारा है तो दूसरों को भी सुख प्यारा है। आपको दुख पसन्द नहीं, इसी प्रकार सभी प्राणी दुख नहीं चाहते। आप अहिंसा धर्म को परमो धर्म समझ लें तो आप किसी भी मत को मानने वाले क्यों न हों, आप सभी जीवों को आत्मवत् समझेंगे। कोई भी धर्म मारने को नहीं कहता।

आप दूसरों से अहिंसा पलवाना चाहते हैं तो पहले स्वयं अहिंसा भगवती की आराधना करें। आप अपने आपको क्या समझते हैं? क्या आप ओसवाल है? क्या आप अग्रवाल हैं? क्या आप माहेश्वरी है? क्या आप विश्नोई हैं? आपको अपना अहं गिरा रहा है। सभी धर्मों में अहिंसा की बात कही गई है। आप सभी जो यहाँ बैठे हैं, यदि अहिंसा धर्म का आचरण बना लें तो आप स्वयं निर्भय होंगे और आपसे कोई भयभीत नहीं होगा। अहिंसा धर्म का पालन करने वाला जीव हिंसा से दूर रहेगा। वह निन्दा, घृणा, तिरस्कार तक की बात नहीं सोचेगा। जल में कछुए रहते हैं, मछलियाँ रहती हैं, मेंढक रहते हैं, साँप भी रहते हैं। वे एक साथ रह सकते हैं तो आप क्यों नहीं एक साथ रह सकते?

मनुष्य प्रकृति का कानून मानकर चले तो यह धरती स्वर्ग बन सकती है आपके घट में दया है तो आपके जीवन में झूठ नहीं होगा, दया है तो चोरी करने का मन नहीं होगा, दया है तो लड़ाई-झगड़े का विचार आपके मन में नहीं आयेगा।

आज तीर्थंकर महावीर का 'जीओ और जीने दो' का नारा तो लगता है, पर इस सन्देश को जीवन में उतारने वाले विरले हैं। इसलिए हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है। अहिंसा के सिध्दान्त में रमण नहीं होने से प्रदूषण बढ़ रहा है। हिंसा से प्रदूषण बढ़ता ही है। पृथ्वी,

पानी, वनस्पति के जीवों को सुनने वाला कौन? वे पुकार भी करें तो किससे? पृथ्वी-पानी तक का उपयोग कैसे करना, यह भी आपको नहीं आता। बोलने में बोल जाते हैं-

जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके।

ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

जल में, थल में, नभ में सब जगह विष्णु है, हर प्राणी में उसका अंश देखते हैं तो फिर किसे मारने जा रहे हैं? आप अपने आपको धर्मी तो कहलाना चाहते हैं, पर यदि परस्पर दया का भाव नहीं, प्रेम का भाव नहीं तो धर्मी होने का क्या अर्थ है?

पशु-पक्षी को ही नहीं आज मानव को पीड़ा पहुँचाई जा रही है। एक दूसरा-एक दूसरे की देहली पर चढ़ने को तैयार नहीं। एक-दूसरा एक-दूसरे की दीवार बनकर खड़ा है। आज भी आपकी स्थिति को देखकर कहना होगा कि तीर्थंकर भगवान् महावीर के सिध्दान्त तो इतने ऊँचे और प्रभु महावीर की जय बोलने वालों का व्यवहार इतना नीचा क्यों? आप चाहे महावीर के भक्त हों, चाहे कृष्ण भक्त हों, चाहे राम के भक्त हों, चाहे अल्लाह के भक्त हों और चाहे आप रहीम के भक्त हों, आपका जीवन महावीर-राम-कृष्ण-रहीम के गुणों से युक्त होना चाहिये। आपकी प्राणिमात्र के प्रति दया होनी चाहिये। करुणा-प्रेम-मैत्री की धारा बहती रहनी चाहिये। बात तो आप यम-नियम, अणुव्रत-महाव्रत की करेंगे और व्यवहार में आपका आचरण उसके अनुरूप नहीं तो उस बात को कहने मात्र से समाज में सौहार्द्र कैसे आएगा? अभी अहिंसा प्रेमी श्रावक भंवरलालजी कोठारी कह गए- 'वत्थु-सहावो धम्मो।'

आप भी प्रभु महावीर के भक्त बनना चाहते हैं तो विभाव से स्वभाव में आइये। स्वभाव में आने के लिए सौ सूत्र याद करने की जरूरत नहीं है। डाकू को 'राम-राम' कहने के लिए कहा गया। वह राम-राम तो भूल गया 'मरा-मरा' करने लगा, फिर भी स्वभाव की स्थिति होने से वह तिर गया। आपको अभी श्रद्धा का स्वरूप

ध्यान में नहीं है। आपको घर-परिवार पर श्रद्धा है, सोने-चाँदी और धन पर श्रद्धा है, कुर्सी पर श्रद्धा है, दुकान पर श्रद्धा है, पर ये श्रद्धाएँ तारने वाली नहीं हैं। अहिंसा धर्म पर, स्व में स्थित होने के स्वभाव पर और जीव में शिव का स्वरूप मानने रूप श्रद्धा होने पर आप इस लोक में सुखी और परलोक में शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। एक कबूतर की रक्षार्थ शरीर का मांस देने वाला अनुत्तर विमान में चला गया। एक खरगोश को बचाने के लिए हाथी ने अपने प्राण भले ही त्याग दिये, उसकी रक्षा की।

मुझे कहना यही है कि अहिंसा परमोधर्म सौ तालों की एक चाबी है, सौ रोगों की अचूक औषधि है। 'अहिंसा परमो धर्मः' रामबाण दवा है। आप इस रामबाण दवा का सेवन नहीं करेंगे तब तक न तो रोग का निकन्दन होगा और न ही आपको ताजगी मिलेगी। इस रामबाण दवा के उपयोग से आपको धर्म का सही स्वरूप ज्ञात हो सकेगा। फिर आपको प्रत्येक जीव के प्रति

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के भाव पैदा होंगे। आप एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी जीवों के प्रति दयावान होंगे। आपके अन्तर में कषाय-मुक्ति की भावना जगेगी। यमनियम और व्रत-महाव्रत में रमण करने की ओर आपका पुरुषार्थ जगेगा। तीन गुणों के पालन करने पर तुलसीदास जी जमानत दे रहे हैं-विश्वास दिला रहे हैं-

**सत्य वचन अरु नम्रता, पर धन धूल समान।
एते पर हरि ना मिले तुलसीदास जम्मान।।**

यहाँ आपको भी मात्र अहिंसा की बात कही जा रही है - मैं फिर कहूँ - आप दूसरों से सहयोग की अपेक्षा करते हैं तो आप स्वयं अहिंसा भगवती के आराधन का आदर्श उपस्थित करें। आपका विश्वास अहिंसा परमोधर्म पर जम जायेगा तो फिर भ्रूण हत्याएँ नहीं होंगी। दहेज की हत्याएँ नहीं होगी। आप आज महावीर जयन्ती के पावन पवित्र दिन पर यह संकल्प जरूर करें कि आप भ्रूण-हत्या व दहेज-हत्या के कलंक से अपने आपको कलंकित नहीं करेंगे। ●

आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी 'चिचोंडी' - आनंद तीर्थ

“अक्षय तृतीया” वर्षीतप पारण्याचे आयोजन - २१ एप्रिल २०१५

पावन सान्निध्य - उपाध्याय प.पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदी ठाणा

आयोजक - गुरु आनंद फाऊंडेशन • पारस फाऊंडेशन, पुणे

परमश्रद्धेय आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी 'चिचोंडी, ता. पाथर्डी, जि. अहमदनगर येथे गुरु आनंद फाऊंडेशन द्वारा आनंद तीर्थ निर्माणचे कार्य सुरु झाले आहे. या तीर्थ भूमीवर गतवर्षी सुमारे १५० वर्षीतप तपस्वींचे पारणे संपन्न झाले.

या वर्षी “अक्षय तृतीया” २१ एप्रिल २०१५ रोजी आहे. गुरु आनंद फाऊंडेशन व पारस फाऊंडेशन तर्फे वर्षीतप पारण्याचे आयोजन केलेले आहे. उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. इंदौर येथून उग्र विहार करून या पारणा महोत्सवात 'चिचोंडी' येथे येणार आहे. तरी वर्षीतप तपश्चर्या करणारे तपस्वी पारणा साठी 'चिचोंडी' येथे यावे. ही विनंती. तपस्वी परिवारांनी मोबाईलवर संपर्क साधून तपस्वीचे नाव, पत्ता इ. माहिती द्यावी.

आपण सर्व सहपरिवार या पारणा महोत्सवात सहभागी व्हावे ही विनंती.

आयोजक

पारस फाऊंडेशन, पुणे

अरुण कटारिया, मो. : ८८८८२८९८८८

गुरु आनंद फाऊंडेशन

गुगळे, मो. : ९८५०७१४१६४

कव्हर तपशील, एप्रिल २०१५

❖ साधू साध्वी संमेलन, इंदौर

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा. यांच्या पावन सान्निध्यात श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय वृहद् साधू-साध्वी संमेलन २० ते २९ मार्च २०१५ या काळात इंदौरमध्ये भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. १८ मार्च रोजी आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा. यांच्या निश्रेत ६०० साधू साध्वी व सुमारे १० हजार भक्तगण यांची भव्य शोभायात्रा निघाली. २१ ते २७ मार्च संताचे सामुहिक चिंतन, २७ मार्च श्रावक संमेलन, २८ मार्च रोजी आचार्य आनंदऋषिजी म.सा. पुण्यस्मरण दिवस, युवा संमेलन, महिला संमेलन संपन्न झाले. २९ मार्च रोजी मुख्य समारोह अनेक मान्यवरांच्या व हजारो लोकांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.

२५ मार्च रोजी प.पु. श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. यांची युवाचार्य पदाची घोषणा करण्यात आली व २९ मार्च कार्यक्रमात त्यांना युवाचार्य पदाची चादर आचार्यश्री व इतर साधू द्वारे ओढवण्यात आली.

❖ श्रुत भवन संशोधन केंद्र - कात्रज, पुणे

कात्रज स्थित श्रुतभवन संशोधन केंद्र द्वारा संपादित केलेल्या प्राचीन अप्रकट १२ ग्रंथाचा लोकर्पण समारोह दि. ८ मार्च २०१५ रोजी श्री वर्धमान सांस्कृतिक केंद्र, मार्केट यार्ड येथे उत्साहात पार पडला. यावेळी स्टेजवर आचार्य श्री हर्षसागरजी म.सा., गणिवर्य वैराग्यरती विजयजी म.सा., मुनिश्री वैभवरत्न विजयजी म.सा., मुनिश्री जितरत्न विजयजी म.सा. आदी ठाणा. यावेळी दिप प्रज्वलन करताना डॉ. सागरमलजी जैन, पद्मश्री कुमारपाल देसाई, डॉ. जितेंद्र शहा, श्री. भरतभाई शहा, श्री. ललीतभाई गुंदेचा इ. मान्यवर.

❖ श्री. सुभाषजी रुणवाल, मुंबई

मुंबई येथील प्रसिध्द बिल्डर्स, शैक्षणिक, सामाजिक व धार्मिक कार्यात अग्रेसर, दानवीर श्री. सुभाषजी रुणवाल यांचे Forbes \$ Billionaires List 2015 मध्ये नाव प्रसिध्द झाले आहे.

❖ श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल - शिरूर भूषण उद्योगपती व दानवीर श्री. प्रकाशभाऊ रसिकलालजी धारीवाल यांच्या ५१ व्या वाढदिवसी शिरूर नागरी सत्कार सोहळा समितीतर्फे त्यांना शिरूर भूषण पदवी देऊन सन्मानित करण्यात आले. राष्ट्रसंत श्री. भैर्यूजी महाराज यांच्या हस्ते श्री. प्रकाशभाऊंना मानपत्र देण्यात आले. यावेळी सोबत आमदार श्री. दिलीपराव वळसे पाटील, आमदार श्री. बाबुराव पाचर्णे, श्री. रसिकलालजी धारीवाल, सौ. धारीवाल, श्री. संतोषजी भंडारी इ. मान्यवर.

❖ कम्युनिकेशन स्पॉट, चिंचवड-उद्घाटन

चिंचवड स्टेशन येथील श्री. हर्षद रविंद्रजी लुंकड यांनी आपल्या कम्युनिकेशन स्पॉट या मोबाईल शोरूममध्ये OPPO मोबाईलचे एकसकलुझिव शोरूम सुरु केले आहे. याचे उद्घाटन OPPO कंपनीचे भारताचे मार्केटींग प्रमुख श्री. हेरिक यांच्या हस्ते करण्यात आले. यावेळी सोबत श्री. चांदमलजी लुंकड, श्री. हर्षदजी लुंकड, सौ. सुशिलाबाई लुंकड इ. मान्यवर.

❖ संचेती ट्रस्ट - पुणे

स्व. इंदूमती बनसीलालजी संचेती ट्रस्टच्या वतीने मार्केटयार्ड, पुणे येथे पाणपोई उभारण्यात आली. या पाणपोईचे उद्घाटन सहाय्यक पोलीस आयुक्त, श्री. मिलींदजी मोहिते, काँग्रेस शहराध्यक्ष श्री. अभयजी छाजेड यांच्या हस्ते झाले. यावेळी सोबत ट्रस्टचे अध्यक्ष श्री. अभयजी संचेती, श्री. मनिषजी संचेती, श्री. अक्षय संचेती, श्री. विजय शिंगवी इ. मान्यवर

श्री वर्धमान श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय वृहद् साधू-साध्वी सम्मेलन - इंदौर

इन्दौर (मध्य प्रदेश) - श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय वृहद् साधु-साध्वी सम्मेलन का २० से २९ मार्च २०१५ तक महावीर बाग, एरोड्रम रोड, इन्दौर पर ऐतिहासिक आयोजन हुआ। जिसमें जम्मू कश्मीर से चैन्नई तक के साधु-साध्वीवृंद पैदल विहार करते हुए इन्दौर पहुँचे। इस सम्मेलन में श्रमण संघ के चतुर्थ पटट्ठर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के नेतृत्व में लगभग ६०० साधु-साध्वीवृंद भाग ले रहे हैं। पूना के पश्चात २८ वर्षों के अन्तराल से माता अहिल्या की धर्म नगरी इन्दौर को यह स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ।

इस समारोह को सभी जाती के धर्मगुरु तथा पुरे भारत के प्रबुध्द नागरीक गण, उद्योगपती, विविध संस्था के पदाधिकारी गण, दिगांबर, श्वेतांबर, मंदिरमार्गी तथा तेरापंथी जैन समाज के प्रतिनिधी गण उपस्थित थे।

भव्य शोभा यात्रा

धर्म ध्वजा, भगवान महावीर का जयजयकार, अहिंसा एवं शाकाहार का संदेश के साथ १८ मार्च को सुबह महावीर भवन, राजवाडा से महावीर बाग एरोड्रम रोड इन्दौर के बीच भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। करीब दीड कि.मी. लंबी इस मंगलयात्रा में ६०० संत साध्वीयों के साथ करीब दस हजार भाविक शामिल हुए थे। यात्रा में पुरुषोने सफेद वस्त्र एवं महिलाने केसरीया लाल रंग की साडी में चल रही थी। सबसे आगे भगवान महावीर के पालने की झाका थी। उसके बाद आचार्य श्री शिवमुनिजी, उपाध्याय श्री मनोहरमुनिजी, श्री विशालमुनिजी, श्री रमेशमुनिजी, श्री प्रवीणऋषिजी, श्री रविंद्रमुनिजी, प्रवर्तक श्री रमेशमुनिजी,

श्री कुंदनऋषिजी, श्री मदनमुनिजी, श्री प्रकाशमुनिजी, महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी आदी सुमारे १८० संत ओर ४५० साध्वीगण चल रहे थे। राज मोहल्ला पर सैकड़ों स्कूली बच्चों ने मानव श्रृंखला बनाकर अहिंसा, शाकाहार, भाईचारे, बेटी बचाने की, शिक्षा, पानी बचाने की गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध आदि के संदेश लिखे पोस्टर के साथ अगवानी की। संतो को कारवाँ करीब दो घंटे में महावीर बाग एरोड्रम रोड पहुँचा। यहाँ आचार्य शिवमुनि ने मंगलपाठ किया।

२० से २७ मार्च तक आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा. एवं सभी पदाधिकारी, साधु-साध्वी के सान्निध्य में आत्मीयतापूर्ण वातावरण में संतो के बीच सामुहिक चिंतन के साथ संगठन को सुदृष्ट करने हेतु ज्ञान-ध्यान का आदान प्रदान हुआ।

२७ मार्च को भव्य श्रावक संमेलन संपन्न हुआ। २८ मार्च को आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. पुण्यस्मरण दिवस मनाया गया। दोपहर में राष्ट्रीय महिला शाखा तत्त्वावधान में वृहद् राष्ट्रीय महिला संमेलन का भव्य आयोजन हुआ। इसमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विकास एवम् बालसंस्कार हेतू नारी का योगदार इस विषय में अनेक प्रबुध्द विचारकोंने अपने विचार रखे। २८ मार्च दोपहर में आय.ए.पी.टी.सी. ग्राऊंड, दलाल बाग इंदौर यहाँ पे भव्य युवा संमेलन का आयोजन हुआ। २९ मार्च को मुख्य समारोह संपन्न हुआ।

प.पू. श्री महेंद्रऋषिजी म.सा. को युवाचार्य पद की चादर आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि संत द्वारा परिधान की गई। ●

Forbes \$ Billionaires List 2015

India's Newest Billionaire, Subhash Runwal Built A Property Empire From Nothing



India's newest billionaire, who makes his debut this year with a \$1 billion fortune, hails from Dhulia, a small town in Maharashtra state.

His grandfather was a jeweler but when Runwal was a teenager, the family had fallen on hard times. The young lad, one of five siblings, left the town of Dhulia and went to study commerce in Pune city. After graduating in commerce, he decided to do his chartered accountancy and moved to Mumbai with less than \$2 in his pocket at age 21.

His first job at what was then Ernst & Ernst got him an American posting in St Louis, Missouri. But within six months he decided to pack up and return home. "I didn't like the lifestyle," says Runwal, seated in his suburban office in Mumbai. Behind his desk is a painting, the handiwork of his daughter, which he proudly displays.

His first abode as a young lad was a modest studio in a far-off suburb in Mumbai, which he rented after landing a job at a chemical firm as an accountant. A can-do attitude helped him acquire a reputation as the go-to guy for dealing with hidebound bureaucracy. Since he spoke the local Marathi language fluently he was able to strike a rapport with local bureaucrats and politicians. "All impossible tasks were given to me," recalls Runwal.

One of them was lobbying the government to ban the import of a chemical, which the company was manufacturing. It took 52 trips to Delhi over a year for Runwal to secure the crucial ban, which enabled the company to start reaping profits. After Runwal had built up his network in bureaucratic circles, he decided to risk everything, choosing real estate as his field of play. He had chanced upon an opportunity hidden in a draconian law called the Urban Land (Ceiling & Regulation) Act of 1976, which he had studied in detail. Under this law, the government imposed limits on land ownership and had the power to acquire vacant urban land.

Runwal acquired his first plot of 22 acres in a central suburb of Mumbai, an area that was eventually to become his stronghold. He made a killing on his first property deal and never looked back. His specialty was to buy litigious plots, which had fallen into the ambit of the land ceiling law, and then work his way into getting the titles cleared.

Putting his name on his projects, Runwal got known for providing low cost apartments aimed at the middle class. One notable project called Runwal Nagar in the suburb of Thane, was a cluster of 16 buildings. Within 18 months of the initial sale, the price had more than doubled. "Our customers were people who had never owned their own homes before. They would come to my office with boxes of pedas and touch my feet," he says.

Even as Runwal was building his real estate empire, he harbored the dream of becoming an industrialist so he got into manufacturing. He expanded into steel and pharma but those businesses unraveled. He eventually sold out and renewed his focus on real estate. While his Runwal Group still builds middle class housing, it has moved up several notches and now has projects in tony south Mumbai where it is building luxury residences for the uber rich.

The entry of his two B-school trained sons in the privately-held family business, starting from 1995, saw Runwal getting into the malls business. He says they pushed him to market their projects more aggressively and create a new corporate identity for Runwal. Older son Sandeep is an MBA from the Indian Institute of Management Bangalore. The younger, Subodh, is an MBA from Northeastern University.

Runwal has managed to get the backing of the Singapore government's GIC, which invested in one of its malls in Mumbai. He says completing projects on time is critical in his business: "My projects never get stuck for approvals. Nothing is impossible." he claims. Lately, Runwal has been picking up big plots in suburban Mumbai, which ensures a long pipeline of new projects.

The patriarch says his efforts now are directed to giving back to society. He donates \$1.5 million every year to various causes. He's built two hostels in Navi Mumbai and offers education scholarships to the less well off. He walks every morning on the promenade opposite his sea-front home and counts Bollywood actor Shahrukh Khan as his neighbor. "I've achieved more than I could have ever dreamt of."

मा. श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल

शिरूर भूषणने सन्मानित

शिरूर नगरपालिकेचे सभागृह नेते व उपनगराध्यक्ष श्री. प्रकाशभाऊ धारिवाल यांचा ७ मार्च रोजी वाढदिवसानिमित्त अभिष्टचिंतन सोहळा आयोजित केला. सुमारे दहा हजार जनांच्या उपस्थितीत राष्ट्रसंत परपूज्य भैर्युजी महाराज यांचे शुभहस्ते शिरूर भूषण पदवी देऊन सन्मानित करण्यात आले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी खा. शिवाजीराव आढळराव होते. प्रमुख उपस्थिती उद्योगपती श्री. रसिकलाल धारिवाल, आमदार श्री. दिलीपराव वळसे पाटील, आमदार श्री. बाबुराव पाचर्णे, मा. आ. श्री. अशोक पवार, मा. आ. श्री. पोपटराव गावडे, शिरूरच्या नगराध्यक्षा सौ. सुनिता कालेवार आदी अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत कार्यक्रम झाला.

श्री. प्रवीण चोरबेले पुणे महाराष्ट्र

शासनाच्या माथाडी बोर्डावर निवड



पुणे : महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र माथाडी हमाल व इतर श्रमजीवी कामगार मंडळाच्या सल्लागार समितीपदी नुकतीच पूना मर्चंट चेंबरचे उपाध्यक्ष मा.

श्री. प्रवीण चोरबेले यांची नियुक्ती केली आहे. सदर नियुक्ति ही पाच वर्षासाठी आहे. श्री. चोरबेले हे पुणे शहर भारतीय जनता पक्षाच्या व्यापारी आघाडीचे ते अध्यक्ष आहेत, तसेच शहरातील विविध सामाजिक व राजकीय संस्थेवर कार्यरत आहेत.

समाजाची आवड, समाजाची निवड

जैन जागृति

बुद्धिमान व्यक्ति का आहार मांसाहार नहीं हो सकता

लेखक : डॉ. चंचलमल चोरडिया, जोधपुर, मो. ९४१४१३४६०६

अज्ञान सभी दुखों का मूल है। अज्ञान के कारण ही मानव सद्चिन्तन से अलग हो अपना भला-बुरा सोचने में असमर्थ है तथा मन एवम् इन्द्रियों का गुलाम बन लक्ष्यहीन जीवन जी रहा है। विज्ञान की दुहाई देने वाले सत्य को जानते एवं मानते हुए भी नकार रहे हैं। उनका जीवन प्रदर्शन, विज्ञापन एवं शीघ्रातिशीघ्र लाभ पाने की भावना से दीर्घकालीन दुष्प्रभावों को समझने में असमर्थ होता जा रहा है। आज का मानव विवेकशून्य बन आँखें होते हुए भी ठोकरें खा रहा है, तथा अमूल्य मानव जीवन को विषय कषायों की तृप्ति के क्षणिक आनन्द में व्यर्थ गंवा सच्चे सुख से वंचित हो रहा है, और दीर्घकाल तक स्वस्थ रहने की कला भूल रहा है। स्वस्थ रहने के लिये शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन आवश्यक होता है परन्तु संतुलित आहार की प्रेरणा देने वालों का चिन्तन क्षणिक लाभ तक ही सीमित हो रहा है। वे जानते हैं कि मानसिक स्थिति का मनुष्य की स्वस्थता में बहुत बड़ा योगदान होता है, फिर भी वे उसको नकार रहे हैं। जो आहार हमारी मानसिकता को बिगाड़ता है वह कैसे संतुलित आहार माना जा सकता है? यह सभी बुद्धिमान व्यक्तियों के लिये चिन्तन का प्रश्न है। अतः मेरा सभी व्यक्तियों से विनम्र अनुरोध है कि वे निम्न बिन्दुओं पर चिन्तन कर अपने आहार के बारे में सही फैसला करें, कहीं वे गलत धारणाओं के शिकार तो बने हुए नहीं हैं?

मांसाहार हेतु मारे जाने वाले जानवरों के रोगों का प्रभाव -

क्या जिन जानवरों का वध किया जाता है, उन पशुओं के स्वास्थ्य का परीक्षण होता है? कहीं वे असाध्य रोगों से पीड़ित तो नहीं होते? कहीं मांस के साथ जानवरों के रोग एवं मवाद तो मांसाहार करने वालों के शरीर में प्रवेश नहीं करते? “जहर उबालने से अमृत

नहीं बन जाता।”

जैसा खाये अन्न वैसा होये मन-

क्या जनावर हँसते-हँसते अपनी इच्छा से मरता है? जिस निर्दयता, क्रूरता, बेरहमी से उनको मारा जाता है, उस वातावरण से उत्पन्न तनाव, भय, घबराहट, छटपटाहट आदि पशुओं के मांस को विषैला बना देते हैं, जो मांसाहार के साथ मांसाहारियों के शरीर में प्रवेश कर भविष्य में अनेक असाध्य रोगों का कारण बनते हैं, उनकी मानसिकता को विकृत बनाने में सहायक होते हैं। इसीलिए तो कहा है- “जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन”।

मांसाहार में रोग के कीटाणुओं की उत्पत्ति -

चेतनाशील जीवों में मृत्यु के पश्चात् हानिकारक कीटाणुओं की उत्पत्ति अधिक एवं शीघ्र होती है। इसी कारण मृत्यु होने के पश्चात् मृतक को जल्दी से जल्दी जलाया अथवा दफनाया जाता है। शवयात्रा में भाग लेने वाले अपने शरीर की शुद्धि हेतु प्रायः स्नान करते हैं। क्या पशुओं का वध करते ही मांस का भक्षण कर लिया जाता है? अगर नहीं तो क्या तब तक उसमें हानिकारक कीटाणु उत्पन्न हो आसपास के वातावरण को दूषित नहीं करते? क्या मांसाहारियों का पेट मृत जानवरों का कब्रिस्तान है?

विपरीत गुण वाले रक्त का दुष्प्रभाव -

रोगी को जब रक्त की आवश्यकता होती है तब डॉक्टर उस रोगी के ग्रुप का ही रक्त क्यों देते हैं? क्या मांसाहारी ऐसा दावा कर सकते हैं कि मांस के साथ जो खून का अंश पेट में जाता है, वह उनके ग्रुप का ही होता है? क्या विपरीत गुण वाला रक्त एवं मांस शरीर में हानि तो नहीं पहुँचावेगा?

मानव के लिये शाकाहार आवश्यक-

क्या कोई व्यक्ति लम्बे समय तक के लिए सिर्फ

होती। यदि कुर्बानी में धर्म होता तो मस्जिदों में कुर्बानी का निषेध नहीं होता।

जिस कार्य को धर्म स्थानों में करने का निषेध हो, उसको कैसे धर्म माना जा सकता है? सभी चिन्तनशील व्यक्तियों को चिन्तन कर धर्म के नाम पर होने वाली कुर्बानी को रोकने हेतु पहल करनी चाहिए।

मांसाहार अज्ञानता का प्रतीक-

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मांसाहार हानिकारक है, दुखदायी है, रोगों से प्रेम कराने वाला है, पाशविक वृत्तियाँ बढ़ाने वाला है, व्यक्ति को क्रूर, निर्दय, हृदयहीन, असंवेदनशील, असंयमी, पापी बनाने वाला है। अतः मानवीय आहार कैसे हो सकता है? स्वास्थ्य की दृष्टि से मांसाहार से लाभ कम हानियाँ ज्यादा है। मांसाहार घाटे का सौदा है। अतः जो मांसाहार की प्रेरणा देने वाले हैं वे उसके दुष्प्रभावों की अनदेखी कर जनसाधारण को गुमराह कर रहे हैं। सत्य की अपने अनुकूल व्याख्यायें कर असत्य पोषण कर रहे हैं।

मांसाहार के प्रति स्वास्थ्य मंत्रालय की उपेक्षा -

आज हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा मंत्रालय अपनी असजगता, अनैतिकता, अदूरदर्शिता, पूर्वाग्रह एवं अज्ञान के कारण उपर्युक्त तथ्यों पर ईमानदारी पूर्वक चिन्तन नहीं कर रहा है, अपितु मांसाहार को प्रोत्साहन देकर जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। परिणामस्वरूप रोग एवं रोगियों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। राष्ट्र में प्रदुषण बढ़ रहा है। पर्यावरण बिगड़ रहा है। अन्याय, अत्याचार बढ़ रहे हैं। भूकम्प एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संभावनाएँ अधिक हो गयी है। स्वास्थ्य के नाम पर होने वाला अरबों रुपयों का खर्च स्वास्थ्य सुधारने के बजाय बिगाड़ने में सहायक बन रहा है।

खान-पान में बुद्धिमान कौन?

अपने स्वस्थ की रक्षा करने वाला या उपेक्षा करने वाला? अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करने वाला अथवा दुरुपयोग या अपव्यय करने वाला? दयालु या

क्रूर, स्वार्थी या परमार्थी?, अहिंसक या हिंसक? अन्य प्राणियों के प्रति मैत्री और प्रेम का आचरण करने वाला या द्वेष और घृणा फैलाने वाला? जीओं और जीने दो के सिध्दान्तों को मानने वाला या दूसरों को स्वार्थ हेतु कष्ट देने वाला, सताने वाला या नष्ट करने वाला उपर्युक्त मापदण्डों के आधार पर ही मनुष्य को सभ्य, सजग, सदाचारी और बुद्धिमान अथवा असभ्य, असजग, दुराचारी और मूर्ख समझा जाता है। अपने-अपने खाने की आदतों के आधार पर हम स्वयं निर्णय करें कि हमारा खान-पान कितना बुद्धिमत्तापूर्ण हैं?

सारांश यही है कि मांसाहार स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक, आर्थिक दृष्टि से महंगा, आध्यात्मिक दृष्टि से नीच गति में ले जाने वाला, मानवीय गुणों का नाश करने वाला, पर्यावरण की दृष्टि से प्रकृति में असंतुलन पैदा करने वाला तथा न्याय की दृष्टि से अन्याय का पोषण करने वाला है। अतः जो मांसाहार करते हैं, करवाते हैं अथवा करने वालों को अच्छा समझते हैं, वे सभी असजग हैं। असंस्कारित है। अमानवीय हैं। अपनी रसनेंद्रिय के गुलाम, स्वाद लोलुप है। पराधीन एवम् परालम्बी हैं। उदासीन हैं। भ्रमित हैं। स्वयं के प्रति भी ईमानदार नहीं हैं। वास्तव में जो बुराई को जानते, मानते हुए भी जो न स्वीकारे उस व्यक्ति, समाज, सरकार को कैसे बुद्धिमान समझा जाए, प्रत्येक चिन्तनशील प्राणी के लिये चिन्तन का प्रश्न है? ●



अकेले मांसाहार पर निर्भर रह सकता है? नहीं! उसको शाकाहार तो करना ही पड़ता है। परन्तु अकेले शाकाहार पर व्यक्ति जीवन भर रह सकता है। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य की शारीरिक रचना शाकाहार के लिये ही उपयुक्त है, मांसाहार के लिये नहीं। पेट्रोल की गाड़ी डीजल या केरोसिन ज्यादा नहीं चल सकती। उसी प्रकार शाकाहारी संरचना वाला मानव यदि मांसाहार करेगा तो जल्दी रोग ग्रस्त होगा।

दूषित तरंगों के दुष्प्रभाव-

आज तरंगों के महत्त्व से कौन परिचित नहीं? टी.वी., रेडियो, स्टेशनों से प्रसारित रंग, रूप, शब्द एवं दृश्यों की तरंगे क्षण मात्र में सारे विश्व में प्रसारित हो जाती हैं एवं उन दृश्यों को हजारों मील दूर बैठा व्यक्ति उसी क्षण देख सकता है। दूरस्थ चिकित्सा अथवा डाउजिंग करने वाले हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति के शरीर के छोटे-से-छोटे अवयव जैसे रक्त की बून्द, नाखून, बाल, थूक आदि के माध्यम से रोग का निदान एवं उपचार करते हैं। तब क्या मांसाहार के साथ शरीर में प्रवेश करने वाली मरे हुए जानवरों की बददुआओं की तरंगे मानव के आचार-विचार, रहन-सहन, चिन्तन-मनन को प्रभावित नहीं करेंगी? दया धर्म का मूल है और हिंसा पाप का मुख्य कारण है। मांसाहार निरापराध प्राणियों के साथ घोर विश्वासघात है। विश्वासघात महा पाप है। इसीलिये सभी धर्मों में अहिंसा, करुणा, दया, प्रेम, सहानुभूति, परोपकार को धर्म माना गया है तथा दूसरों को दुख देने को महापाप बतलाया गया है। सभी धर्मप्रवर्तकों ने मांसाहार का निषेध किया। परन्तु उन्हीं के अनुयायी आज पशुबलि एवं कुर्बानी के नाम पर अपनी स्वाद-लोलुप स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण हिंसा में लिप्त हों, मांसाहार की प्रेरणा करें, कितना विसंगत है?

मांसाहार कितना न्याय संगत?

अगर कोई मनुष्य को खा जाता है तो उसको नरभक्षी कहा जाता है। ऐसे जानवरों को लोग जिन्दा नहीं रहने देते। परन्तु मांसाहारी जीवन-पर्यन्त कितने

प्राणियों की हत्या कर खाता है, फिर भी ऐसे मानव को सभ्य, बुद्धिमान मानना कदापि न्याय संगत नहीं है।

जैसा करेगे वैसा फल मिलेगा-

यदि आपके बच्चे को कोई मार डाले, उस पर क्रूरता करे, अत्याचार करे तो क्या उस व्यक्ति पर आप प्रसन्न होंगे? कभी नहीं। यथाशक्ति आप उसको दण्ड देंगे। अतः अपनी सुरक्षा एवं प्रसन्नता चाहने वालों को दूसरों की सुरक्षा एवं खुशी प्रदान करना चाहिये। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जीवों पर होने वाली क्रूरता में सहभागी नहीं बनना चाहिये, जो प्राण हम दे नहीं सकते उसको लेने का हमें कोई अधिकार नहीं। यह अपनी नीचता, स्वार्थ एवं ताकत का दुरुपयोग है, कायरता है, प्रकृति के नियमों का उल्लंघन है तथा अन्याय, अत्याचार का प्रतीक है, जिसका परिणाम मांसाहारियों को भविष्य में निश्चित रूप से भुगतना ही पड़ेगा।

“सुख दिया सुख होत है” हमें वही मिलता है जो हम दूसरों को देते हैं। यह जगत क्रिया-प्रतिक्रिया, ध्वनि-प्रतिध्वनि से युक्त है। घृणा या प्रेम जो भी हम देंगे वहीं हम पर लौटकर आने वाला है। जैसा बीज बोयेंगे वैसा ही फल मिलेगा। अतः सारे प्राणी जगत की हम से अपेक्षा है कि जैसा हम दूसरों से चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार अन्य जीवों के प्रति करे। प्रकृति का दण्ड देने का अपना अलग ही विधान है। “वहाँ देर हो सकती है अंधेर नहीं है” जो प्रकृति के इस अटूट सिद्धान्त को नकारता है, उसको पछताना पड़ता है। अपराध के प्रथम प्रयास में दण्ड से बच जाने वाला यदि अपनी सफलता पर गर्व करे, तो यह उसकी मूर्खता ही समझनी चाहिये।

मांसाहार और अध्यात्म -

सभी धर्म प्रवृत्तकों ने मांसाहार का निषेध किया। परन्तु उन्हीं के अनुयायी अपनी स्वाद लोलुप प्रवृत्ति के कारण अज्ञान, अविवेक एवं सम्यक् चिन्तन के अभाव में भ्रामक कुतर्कों का सहारा ले धर्म के नाम पर पशुबली या कुर्बानी करें कितना विसंगतका है? प्रायः किसी भी धार्मिक कार्य को धार्मिक स्थानों में करने की मनाई नहीं

धर्म और समाज में बढ रहे आडम्बर प्रदर्शन पर कैसे रोक लगाएँ ?

लेखक : पवनकुमार जैन, जोधपुर, मो. : ९४६१४७६२८०

वर्तमान में युवा वर्ग विज्ञान की बाहरी चमक-दमक से आकृष्ट हो रहा है। परिणाम स्वरूप उनका दृष्टीकोण संकीर्ण एवं संकुचित होता जा रहा है। वे भौतिकवादी, यंत्रवादी, सुविधावादी विचारधाराओं से प्रेरित होते हुए दिखाई दे रहे हैं। अतः समय के साथ आए बदलाव के कारण वे धर्म में भी परिवर्तन चाहते हैं। प्राचीन काल में धर्म आडम्बर और प्रदर्शन (दिखावें) से कोसों दूर था। लेकिन वर्तमान में युवावर्ग प्रत्येक प्रवृत्ति को भौतिकवाद की कसौटी पर कसना चाहता है। वे यह भी भूल जाते हैं कि मनुष्य केवल शरीर या मन की इकाई मात्र नहीं है बल्कि उसका आध्यात्मिक अस्तित्व है। आध्यात्मिकता का वास भोग में नहीं त्याग में है। आध्यात्मिक जीवन के प्रति उनकी सोच इतनी संकीर्ण हो गयी है कि वे सेवा, त्याग, दया, परोपकार, बड़ों का सम्मान, सहयोग आदि मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। जिसके प्रभाव से धर्म और समाज के ऊपर भोगवादी संस्कृति हावी हो रही है। धर्म भी आज प्रदर्शन की वस्तु हो गया है। आचार-विचारों का अंधानुकरण होता जा रहा है। इसलिए धर्म और समाज में विषमता और विसंगतियाँ बढ रही हैं, उसके कुछ कारण इस प्रकार हैं-

१) कथनी करनी में अन्तर - धर्म और समाज के मुखिया सादा जीवन और उच्च विचार की जीवन शैली पर जोर देते हैं। जैसेकि शादी-विवाह में अधिक डेकोरेशन नहीं करना, फाईव्ह स्टार होटलों में शादी आदि के कार्यक्रम नहीं करना, तपस्या आदि के समय आडम्बर नहीं करना इत्यादि। लेकिन उनकी कथनी और करनी में कितना अन्तर है। जब यही प्रसंग उनके परिवार में उपस्थित होते हैं, वे इसको अपनी पोजिशन का

सवाल मानते हुए, अपने के प्रति अंधे हो जाते हैं। जैसेकि इनके यहाँ विवाह आदि समारोह में एक दिन के होटल किराये आदि का जितना खर्च होता है, उतने खर्चे में तो मध्यम वर्ग का पूरा विवाह समारोह सम्पन्न हो जाता है। अतः समाज में कथनी-करनी का अन्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। वर्तमान में सामाजिक मूल्यों के पालनकर्ताओं का अकाल पढा हुआ है। अतः युवा पीढ़ी के सामने आदर्श का अभाव है। फलतः उसका आचार विचार भी उसके अनुरूप हो रहा है। इसलिए धर्म और समाज में बढते हुए आडम्बर को रोकना है, तो धर्म और समाज प्रमुखों को सर्वप्रथम अपनी कथनी और करनी में एकरूपता लानी होगी।

योग के नाम पर भोग का बोल बाला है,
झुठों की जीत सच्चे का मुँह काला है।
आदर्श बंद है पोथी प्रवचन में,
पाप मालामाल और धर्म दिवाला है।

२) अध्यात्मवाद में कमी : बडे दुर्भाग्य की बात है कि आज का युवावर्ग अध्यात्मवाद तथा नैतिक आदर्शवाद के सही अर्थ तक नहीं पहुँच पा रहा है और उसने अंधविश्वास, पाखण्ड, रूढिवाद आदि के रूप में इसे स्वीकार कर लिया है। वर्तमान समय में युवा भोग में ही सुख मान रहा है, इसलिए वह धर्म में भी भोगोपभोग साधनों को बढावा दे रहा है। इसका मुख्य कारण है, हमारे धर्म गुरुओं में अध्यात्म की कमी, एक समय था जब हमारे धर्म गुरु जैसे कि अनाथीमुनि जिनको मगधाधिपति श्रेणिक सभी प्रकार की भोगोपभोग सामग्री उपलब्ध कराने को तैयार था। उसको अध्यात्म का सही स्वरूप बताने के लिए कि आत्मानंद की अनुभूति भोग में नहीं त्याग में, इसलिए उसके पास भोगोपभोग सामग्री

होते हुए भी अनाथ कह दिया। अनाथीमुनी के अध्यात्म की चरम सीमा थी। लेकिन वर्तमान में हमारे धर्मगुरुओं में आचरण की कमी से अध्यात्म में की कमी आई है। जिससे धर्म और समाज में बाह्य दिखावे को बढ़ावा मिल रहा है। नेमिचन्द्र शास्त्री कहते हैं कि आचरण तो व्यक्ति की श्रेष्ठता एवं निष्कृष्टता का माफक यंत्र है इसी के द्वारा जीवन की उच्चता और उच्चतम रहन-सहन के साधन अभिव्यक्त होते हैं। आचरण का पतन है और आचरण की उच्चता जीवन की उच्चता है। अतः अध्यात्मवाद को ऊँचा उठाने के लिए आचरण की आवश्यकता है इसकी कमी के कारण व्यक्ति की प्रवृत्ति निम्न स्तर की होती जा रही है। अतः समाज के प्रत्येक घटक को वीतराग धर्म के सही स्वरूप को समझकर अपने अध्यात्म को बढ़ाएँगे तभी धर्म और समाज में बढ़ते हुए आडम्बर पर लगाम लगाना संभव है।

दूध का दाम लेकर आधा पानी पिलाते हैं,
स्वर्ग की गारंटी से भक्तों को माला पहनाते हैं।
दुकानें नई-नई खुलने लगी है धर्म की,
खेद है कि धर्म के नाम पर व्यापार चलाते हैं।

३) वैचारिक प्रदूषण – वर्तमान समय में ईर्ष्या, राग द्वेष, काषायिक भावना आदि में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। आज इस दौड़ की जिन्दगी में व्यक्ति के विचार शुद्ध नहीं है। वह अपने से आगे बढे हुए दूसरे व्यक्ति के प्रति मन में ईर्ष्या-द्वेष की भावना रखता है कि वह उससे आगे कैसे बढ गया? जैसे विचार होते हैं, उसके अनुसार व्यक्ति के चेहरे के भाव एवं भाषा होती है। जिससे व्यक्तियों में दूरियाँ बढ रही है। ज्यों ज्यों दिलो की दूरियाँ बढेगी त्यों त्यों एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए आडम्बर और प्रदर्शन की प्रवृत्तियों को बढ़वा मिलेगा अतः आडम्बर और प्रदर्शन को नियंत्रित करने के लिए वैचारिक प्रदूषण को मिटाना होगा।

४) परिग्रहवाद – परिग्रह की मानसिकता से

धर्म और समाज का जितना नुकसान हो रहा है। उतना तो कोई अणुबम भी नहीं कर पाएगा, क्योंकि आत्मगत दोषों द्वारा जीव ऐसे गड्डे में गिरता है कि वहाँ से विकास का मार्ग ही सदैव के लिए रूक जाता है। इस परिग्रह ने परस्पर सहयोग, सहानुभूति, एकता, उदारता, प्रेम, संतोष स्पष्टवादिता, निर्भिकता आदि मानवीय मूल्यों पर ऐसा कूठाराघात किया जिसके कारण मानव ऊपर उठ ही नहीं सकता है। अतः परिग्रह ही समस्त अनर्थों का मूल है। परिग्रह की लालसा ने मानव को स्वार्थी और पथभ्रष्ट बना दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति की यही मानसिकता है कि जिसके पास अधिक धन-दौलत, सुख-सुविधा के साधन होंगे वह अधिक सुखी होगा, समाज में उसका मान-सम्मान होगा। अतः प्रत्येक व्यक्ति एनकेन-प्रकारेण अधिक से अधिक धन-दौलत व सुख-सुविधाओं को एकत्रित करना चाहता है। फिर वाह वाही लूटने के लिए उसका प्रदर्शन करता है और नासमझ लोगों के द्वारा थोड़ी सी प्रशंसा होने पर वह फूला नहीं समाता है। अतः आडम्बर और प्रदर्शन को रोकने के लिए अपरिग्रह के सिध्दांत का अनुपालना करनी होगी।

५) अहंकार की भावना : समाज का छोटा या बड़ा कोई भी व्यक्ति हो जब उसके अहंकार पर चोट पडती है तो उसकी सहनशक्ति जवाब दे जाती है। अतः प्रत्येक सदस्य को अपने अहं (मैं) की भावना को एक सीमा तक रखना चाहिए। छोटी-छोटी बातों को अपने अहं का कारण नहीं बनाकर सामनेवाले का आशय समझने की कोशिश करनी चाहिए आज प्रत्येक व्यक्ति शब्दों को पकडता है लेकिन उसके आशय को समझने की कोशिश नहीं करता। अहं को पुष्ट करने के लिए प्रदर्शन और आडम्बर को बढ़ावा मिल रहा है।

परायों का दर्द देखो तो अपना कम हो जाता है,
ईर्ष्या से दूसरों की खुशी, अपना गम हो जाता है।
अहम् की गाँठ सुलझ जाये अगर,
मैं और तुम मिलकर हम हो जाता है।।

६) संकीर्णता : आज अधिकतर मनुष्यों के विचार संकीर्णता से युक्त है। समाज के सभी लोग करते हैं, मैं नहीं करूँगा तो लोग क्या कहेंगे, मेरे बारे में क्या सोचेंगे, मुझे कंजूस कहकर मेरे ऊपर हँसेंगे। अतः मुझे भी वही करना चाहिए जो समाज के लोग करते हैं। इस विचार धारा से प्रेरित हो समाज का प्रत्येक घटक सामर्थ्य हो अथवा नहीं फिर भी वह दिखावे और प्रदर्शन के अखाड़े में कूद पड़ता है। दूसरों से स्वयं को सर्वश्रेष्ठ संपन्न कहलाने के लिए वह अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देता है। जिसके कारण आडम्बर आदि में दिन दुनी और रात चौगुनी वृद्धि हो रही है।

पंथ के झगड़ों में मत उलझो, यह तो केवल सहदारी है,

धर्म को धारण करो मित्रों, धर्म कल्याणकारी है।

धर्म और पंथ के भेद को, समझ लेना जरूरी है, पंथ तो दुकानदारी है और धर्म ईमानदारी है।।

यदि हम धर्म और समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो एक दिन में सबकुछ नहीं बदल सकता है। समाज के प्रत्येक घटक को परिवर्तन की शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी, स्वयं की सोच को बदलना होगा, बदलाव का पहला कदम अपने परिवार से शुरू हो, तो हम कुछ हद तक आडम्बर और प्रदर्शन पर रोक लगा सकते हैं। अतः ऐसे कुछ उपाय हैं जिससे बड़े हुए आडम्बर और प्रदर्शन पर रोक लग सकती है, जैसेकि

१) साध्य एवं साधनो की पवित्रता – हमारा जो भी साध्य हो हमें उसकी पवित्रता के साथ-साथ साध्य को प्राप्त कराने वाले साधनों की पवित्रता पर भी पूर्ण ध्यान देना चाहिए। साध्य की प्राप्ति गलत साधनों से नहीं होनी चाहिए। व्यर्थ या बईमानी का पैसा व्यक्ति के पास आता है, वह जिस रास्ते से आता है, उसी से वापस चला भी जाता है। अतः वर्तमान में आडम्बर और प्रदर्शन को दो नम्बर के धन ने बढ़ावा दिया है, आगमकालिन युग में श्रावको का व्यवसाय आदि नैतिक

सिध्दांतों के अनुकूल होता था।

२) अहिंसा का पालन : अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए दूसरों की सम्पत्ति, भावनाओं एवं हितों पर चोट करना हिंसा है। दूसरों के अधिकारों का हनन करना अहिंसा सिध्दांत के प्रतिकूल है। प्रत्येक मानव का आचरण विश्वास, सेवा, भलाई, ईमानदारी, सहयोग, नम्रता, सम्मान आदि से सराबोर होना चाहिए ताकि मानवीय हितों की अभिवृद्धि होती रहे। अतः अपने निजी हितों के कारण दूसरों का नुकसान न होना चाहिए इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। अतः अहिंसा का पूर्णतया पालन ही आडम्बर और प्रदर्शन पर नियंत्रण कर सकता है।

३) आत्म-संतुष्टी : मनुष्य गुणों की खान है, इसलिए ही बनता महानं है। किन्तु मनुष्य को आत्म संतुष्टि केवल मानसिक प्रसन्नता के द्वारा मिलती है एवं मानसिक प्रसन्नता सब सुखों की जननी है। इसको प्राप्त करने के लिए सदैव नैतिक कार्य करने चाहिए जिससे अंतरात्मा खुश होती है एवं मानसिक प्रसन्नता मिलती है। आत्म संतुष्टि नैतिकता से जुड़ी हुई है और जो नैतिकता निराभिमानता का दूसरा पहलू है।

४) दूसरों का सहयोग करना – योग्य व्यक्ति के अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग करना चाहिए। भाईचारे की भावना रखने से नंदनवन रूपी समाज फलता-फुलता है। साधार्मिक व्यक्ति का सहयोग करना साधार्मिक वात्सल्य कहलाता है। इससे आपसी प्रेम बडता है। अतः व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक सहयोग करना चाहिए। सामाजिक व्यवहार के पालन में स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता होनी चाहिए। स्वायत्तता की छूट देने पर व्यक्ति अपने अंतर्विवेक, सदबुद्धि एवं अंतर्ज्ञान से कार्य करता है एवं उसके प्रति उसकी नैतिक जिम्मेदारी होती है। जिसे सामने वाला व्यक्ति अनुचित कार्यों का सहारा न ले और व्यर्थ के आडम्बर और प्रदर्शन के चक्कर में नही पड़ेगा।

५) **अनुकरणीय आचरण**— व्यक्ति को सभी के साथ श्रेष्ठ आचरण करना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति आचरण से ज्यादा सीखता है, नियमों से कम। श्रेष्ठ व्यक्ति की उन्नत जीवन शैली, भौतिकता की चकाचौंध से मूर्च्छित मानव को सादगी एवं संयम का पाठ पढानेवाली हो। सप्त कुव्यवसनों का त्याग करके सादगीमय जीवन जीने वाला जन-जन का प्रिय बन जाता है। जाओ लाख, रहो साख के सिद्धांत पर चलने वाला आदर्शवान् होता है। उसके साथ रहनेवाला उसके अच्छे व्यवहार से कुछ न कुछ अच्छे संस्कार आत्मसात् करता है।

६) **वादों का निभाना** – प्रत्येक व्यक्ति को अपने द्वारा किए गए वादों एवं आश्वासनों को पूरा निभाना चाहिए। स्वार्थी बनकर कभी भी अपने वचन से नहीं मुकरना चाहिए। कथनी-करनी की समानता रखनी चाहिए। किसी भी परिस्थिति में अपने प्रण को निभाना चाहिए। समाज के प्रत्येक सदस्य को अपने-अपने कर्तव्य का बोध होना चाहिए एवं प्रत्येक सदस्य उसका ईमानदारी से पालन करे। जब व्यक्ति एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्य को समझेगा तो आपसी आत्मीयता बढ़ेगी, आपस में सहयोग बढ़ेगा। जिससे आडम्बर आदि में कमी होगी।

७) **उदारता** – यह गुण समाज को बांधे रखने में महत्त्वपूर्ण है। उदारता का अर्थ है दूसरों की गलतियों का क्षमा करना या कमजोर व्यक्ति का हर तरह से सहयोग करना। जब किसी सदस्य से गलती हो जाए तो उस बात को ज्यादा महत्त्व नहीं देते हुए उसे आवश्यक हो तो प्रेम से समझा कर उसे क्षमा कर दे। ऐसा करने

से उस सदस्य का संघ प्रमुखों के प्रति आदर, प्रेम आदि बढ़ेगा। इससे धीरे-धीरे प्रदर्शन को नियंत्रित किया जा सकता है।


इस प्रकार इन उपायों को अपना कर धर्म और समाज में बढ़ते हुए आडम्बर और प्रदर्शन को रोका जा सकता है। जैनदर्शन के अनेकांतवाद सिद्धांत के अनुसार दूसरों की बातों एवं कार्यों को हम समझें, अस्तेय के अनुसार दूसरे की सम्पत्ति का लोभ न करें, अपरिग्रह के अनुसार आवश्यकता से अधिक संग्रह न करें और ब्रह्मचर्य के अनुसार अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करें तो निश्चित ही समाज से असमानता, शोषण, लूटमार आदि पर नियंत्रण किया जा सकता है। जैन दर्शन अनासक्ति का मूल्यवान संदेश देता है। इस संदेश से प्रेरित होकर मनुष्य अपनी लालसा पर अंकुश लगा सकता है। भौतिक सुखों के प्रति विकर्षित होकर मनुष्य आत्म-संतोषी होने का प्रयास कर सकता है। इस प्रकार इस सिद्धान्तों पर अमल कर हम आज बढे हुए दिखावें पर रोक लगा कर धर्म और समाज के वास्तविक स्वरूप की सुरक्षा कर सकते हैं।

जिनशासन का गौरव जिसमें वही काम हमको करना,

जन्म लिया जिस कुल में उस कुल की इज्जत रखना।

प्राण जाय तो जाय भले ही, नहीं मृत्यु से डरना, सत्य, अहिंसा की प्रतिष्ठा हित, कदम न पीछे घरना।।●

प्रेषक : महेश नाहटा, नगरी



वधू-वर जाहियत 'जैन जागृति' मासिकात व वेबसाईटवर द्या.
हजारो जैन परिवार व त्यांचे नातेवाईक,
मित्रपरिवार पर्यंत पोहचा.
आपणांस वधू-वर निवडताना योग्य चॉईस मिळण्यास मदत होईल.